विनि और अब्राहम

लेखन: डॉन फ़ित्ज़जैरल्ड, चित्रांकन: कैथरीन स्टॉक
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा





विनि और अब्राहम





विनि रीम, खुद की बनाई लिंकन की प्रतिमा के साथ

विनि और अब्राहम

लेखन: डॉन फ़ित्ज़जैरल्ड
चित्रांकन: कैथरीन स्टॉक
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



मेरी बेटी ब्रेन के लिए - डी.एफ.

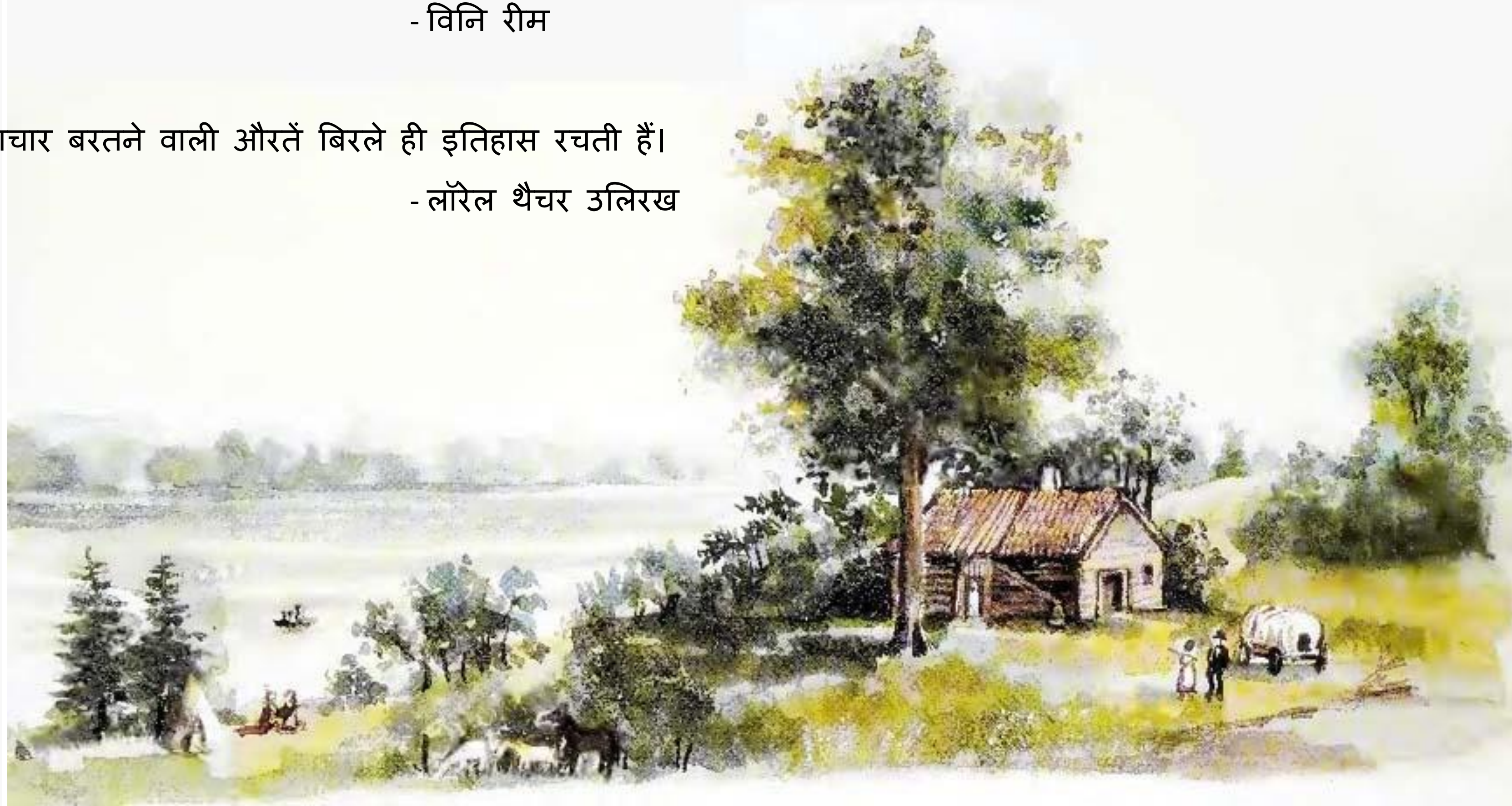
रूथ और रूडी ली के लिए - सी.एस.

अगर तुम आराम करने के लिए हरी घास पर लेटो, और सूरज की रोशनी को चमकते और पत्तों को दमकते देखो; पाखियों को बहला-फुसला कर गाने को कहो...चीटियों को मशक्कत करते देखो और उनसे धीरज सीख लो। मकड़ी को अपना जाल बुनते देखो और उससे हुनर सीखो। हज़ारों नैसर्गिक आवाज़ों को सुनो, ग़ौर करो कि प्रकृति कितनी व्यस्त है। वह पल भर भी नहीं गंवाती। वह कभी थकती नहीं। फिर हम क्योंकर थकें?

- विनि रीम

शिष्टाचार बरतने वाली औरतें बिरले ही इतिहास रचती हैं।

- लॉरेल थैचर उलिरख





''विनि रीम मेरे एक चिड़िया बनाओ ना?''

''और मेरे लिए एक भेड़िया।''

''मेरा तो तुम चेहरा ही बना दो!''



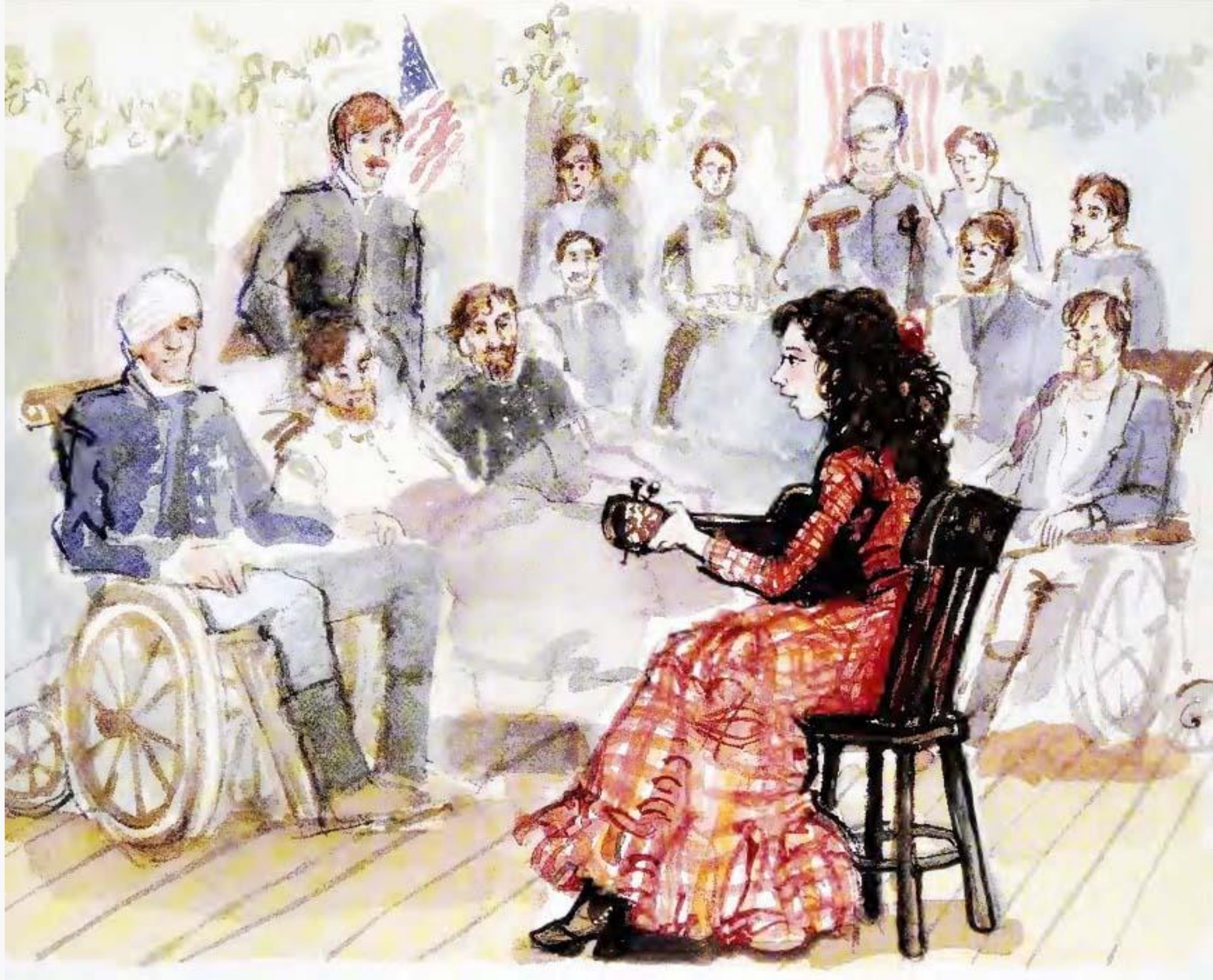
बच्चे एक घुंघराले बालों वाली लड़की के गिर्द जमा थे। वह नदी तट से चिकनी मिट्टी ले रही थी, उसके तेज़ हाथ आकृतियाँ गढ़ रहे थे - एक चिड़िया, एक भेड़िया और एक विनान्गो इन्डियन (अमरीका के मूल निवासियों की एक प्रजाति) लड़की का चेहरा।

''यह तो ठीक मेरी जैसी लगती है विनि!'' उस बच्ची ने कहा। और सचमें मिट्टी से गढ़ी वह मूरत ठीक उस बच्ची जैसी ही दिख रही थी। इसलिए क्योंकि विनि रीम में बुतसाज़ी का हुनर था।

विनि को विस्कॉन्सिन इलाके में अपने बचपन के मस्ती भरे दिन बड़े ही अच्छे लगते थे। पर तब देश में गृह युद्ध छिड़ गया और उसके परिवार को वॉशिंगटन डी.सी. चले आना पड़ा। जंग का यह समय राजधानी में कठिन था, विनि का परिवार अपना गुज़ारा चलाने के लिए जूझ रहा था।

हालांकि वह ग़रीब थी, विनि के जीवन को संगीत और कला धनी बनाते थे। वह अस्पताल में जा घायल सैनिकों के लिए गिटार बजाया करती थी।





विनि अपने कोट की जेब में हमेशा एक स्कैचबुक रखती थी और उसमें वॉशिंगटन की गहमा-गहमी भरी सड़कों पर नज़र आने वाले लोगों के चेहरे और चीज़ों की तस्वीरें आँका करती थी।

एक दिन उसे भीड़ में उसे एक लम्बा इन्सान नज़र आया, जो स्टोवपाइप टोप (लम्बा टोप) और गहरे रंग का सूट पहने था। वह उसे फ़ौरन पहचान गई - राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन! विनि के माता-पिता राष्ट्रपति के हिमायती थे। जंग के समय में उन्हें लोगों के बीच इस तरह खुले-आम घूमते देख विनि ने मन-ही-मन उनकी हिम्मत की दाद दी, क्योंकि उन्हें हर दिन मार डाले जाने की धमकियाँ जो मिला करती थीं।

उसने उनके चेहरे के उदास से भाव पर ग़ौर किया। सोचा, काश वह नदी तट वाले अपने घर होती तो चिकनी मिट्टी से उनके चेहरे को गढ़ लेती। उसे सड़क किनारे मिट्टी दिखी, यह लालच भी जगा कि वह वहीं, उसी वक़्त, उनकी मूरत बना ले। पर विनि को अपने नए काम पर समय से पहुँचना था। वह अमरीका के डाक विभाग में काम जो करने लगी थी।

धम्म! धड़ाम!

पास ही दक्षिणी युद्ध रेखा से दागी गई तोपों से उसे चेत आया। उसने गहरी उसाँस छोड़ी, "मुझे देर हो रही है, कला को अभी इन्ज़ार करना होगा।"





क्योंकि अनेक पुरुष सैनिक बन लाम पर लड़ने जा चुके थे, कुछ कम्पनियों ने औरतों को काम पर रखना शुरू कर दिया था, बेशक कम वेतन पर! चौदह साल की विनि भी उन पहली औरतों में शामिल थी जिसे डाक विभाग ने काम दिया था। वह 'डेड लैटर ऑफिस' में काम करती थी। यानी उस डाक को छाँटती थी जो, इसलिए ठिकाने पर पहुँचाई नहीं जा सकती थी क्योंकि पाने वाला या तो उस पते पर अब रहता ही नहीं था, या फिर उसकी मौत हो चुकी होती थी।

पूरे दिन विनि की फुर्तीली उंगलियाँ सैंकड़ों ख़तों को छाँटती। उसके हाथ दुखने लगते। इस नीरस काम को सहने लायक बनाने वाली एक ही चीज़ थी, वह थी दोपहरी की छुट्टी।

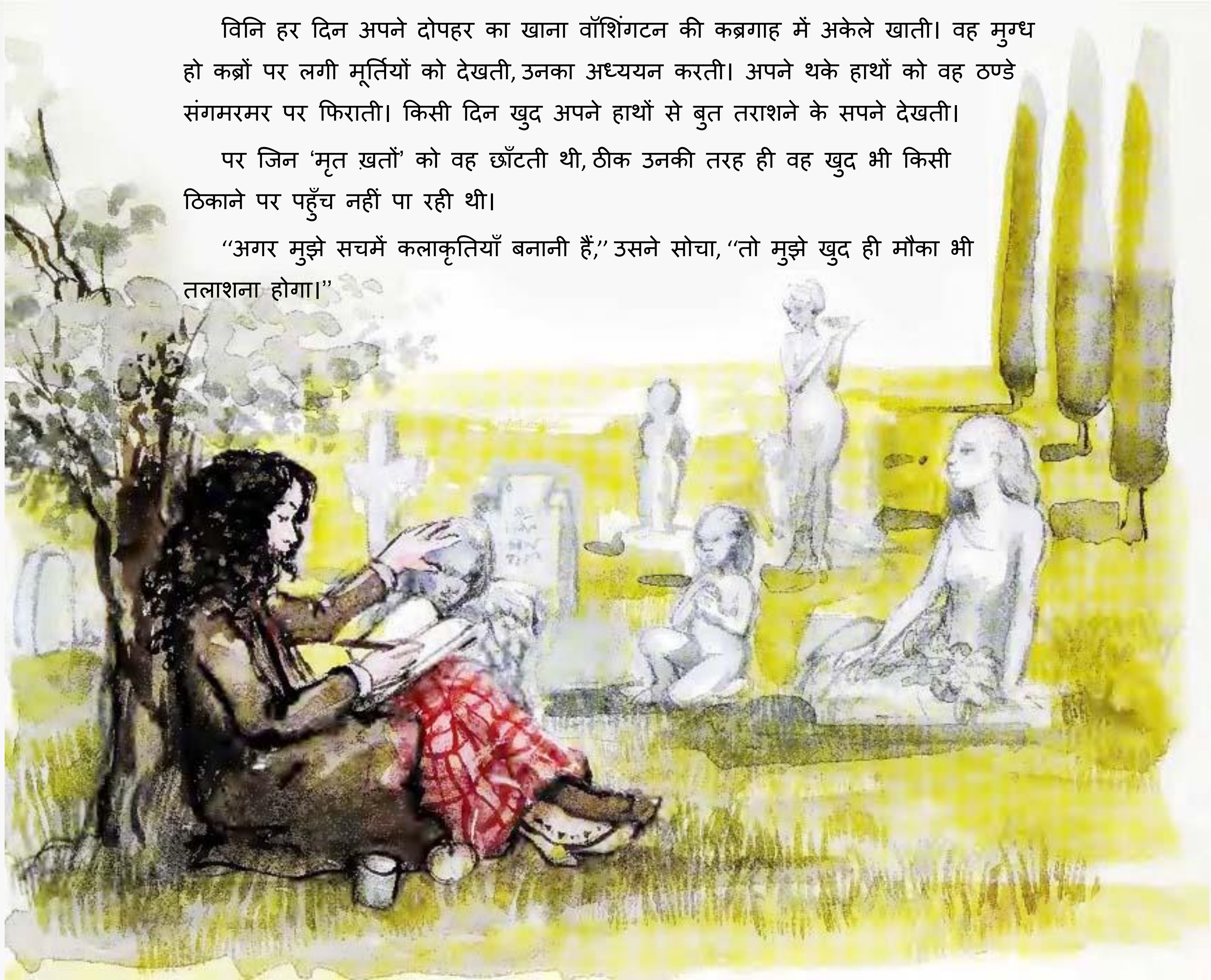
"कहाँ भागी जा रही हो मिस रीम?" उसके साथ काम करने वालों ने पूछा।

"अपने कब्र वाले कुछ दोस्तों से मिलने," विनि ने जवाब दिया।

विनि हर दिन अपने दोपहर का खाना वॉशिंगटन की कब्रगाह में अकेले खाती। वह मुग्ध हो कब्रों पर लगी मूर्तियों को देखती, उनका अध्ययन करती। अपने थके हाथों को वह ठण्डे संगमरमर पर फिराती। किसी दिन खुद अपने हाथों से बुत तराशने के सपने देखती।

पर जिन 'मृत ख़तों' को वह छाँटती थी, ठीक उनकी तरह ही वह खुद भी किसी ठिकाने पर पहुँच नहीं पा रही थी।

"अगर मुझे सचमें कलाकृतियाँ बनानी हैं," उसने सोचा, "तो मुझे खुद ही मौका भी तलाशना होगा।"



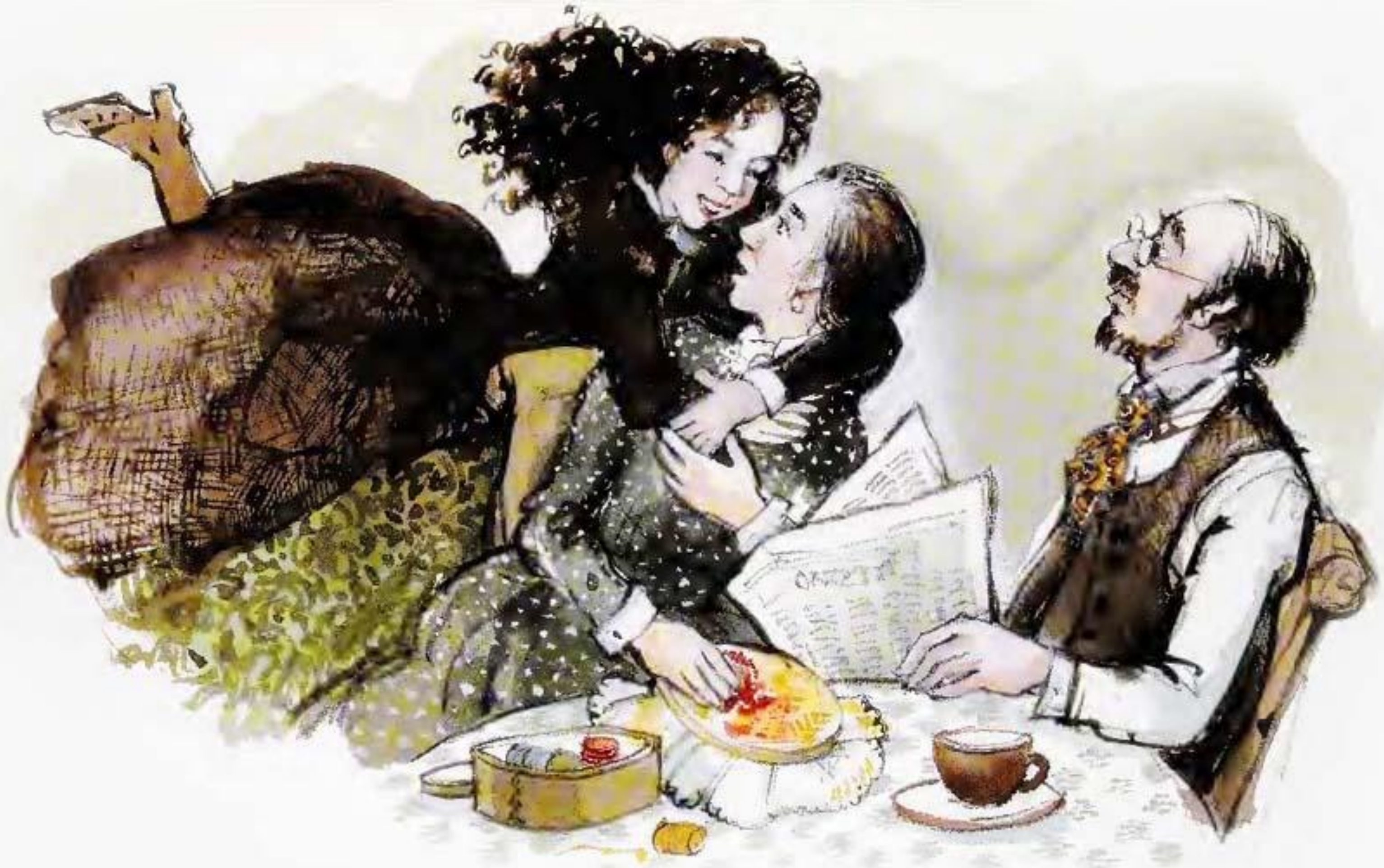


सो एक दिन मन पक्का कर विनि ने वॉशिंगटन के मशहूर मूर्तिकार के घर का दरवाज़ा खटखटाया। जब क्लार्क मिल्स ने दरवाज़ा खोला उन्हें लालौंस लिए भूरे घुंघराले बालों और काली आँखों वाली एक सुन्दर किशोरी दिखी। ''क्या तुम मॉडलिंग के काम के लिए आई हो?'' उन्होंने पूछा।

''नहीं सर, मैं कलाकृतियाँ बनाना चाहती हूँ।''

क्लार्क मिल्स को कुछ हंसी-सी आई, पर कौतुहल भी जगा। उन्होंने विनि को अपने स्टूडियो में बुलाया और मिट्टी को एक लौंदा उसकी ओर उछाल दिया। दो घंटे बाद उन्होंने विनि की बनाई मूरत को देखा - यह एक इन्डियन चीफ (मुखिया) का बुत था, जिसे विनि जानती थी - वे सन्न रह गए। ''तुम में असाधारण प्रतिभा है,'' वे बोले। उन्होंने विनि के सामने उसे अपना शागिर्द बनाने का प्रस्ताव रखा। ''मैं चाहता हूँ कि तुम फ़ौरन ही काम शुरू कर दो।''





विनि रास्ते भर कूदती-फांदती-थिरकती चल रही थी, ताकि घर जा माता-पिता को यह शानदार खुशख़बरी दे सके।

पर वे खास खुश न हुए। "डाक घर तुम्हें ज़्यादा पैसा देता है," उन्होंने उसे याद दिलाया।

पर विनि हार कहाँ मानने वाली थी। उसने डाक घर वालों को इस बात पर मना लिया कि वह हर दिन काम से कुछ जल्दी छूट जाए - पर केवल तब, जब वह कम से कम दो सौ खतों को निपटा चुकी हो। इसके बाद ही विनि क्लार्क मिल्स के पास मूर्तिकला का अध्ययन-अभ्यास करने जा पाती।



विनि मेहनती तो थी ही, जल्द ही उसकी प्रतिभा की ख़बर फैली। धीरे-धीरे कांग्रेस के सदस्य क्लार्क मिल्स की दिलकश शागिर्द से अपनी मूर्तियाँ बनवाने आने लगे। वे अपनी अहमियत से फूले उसके सामने बैठते, ताकि वह मिट्टी में उनकी सूरत को कैद कर ले।

पर विनि उस लम्बे इन्सान को न भूल सकी जिसका खुरदुरा, झुर्रीदार चेहरा था, जिसकी मूर्ति वह किसी भी दूसरे इन्सान से ज़्यादा शिद्दत से बनाना चाहती थी।

उसने अपनी इच्छा उन कांग्रेस सदस्यों को बताई जो स्टूडियो में आते थे, वे उस पर हंसे।

''राष्ट्रपति एक जंग लड़ने में व्यस्त हैं,'' वे बोले।

''अरे, कितने बड़े हैं आपके सपने मिस रीम!'' उन्होंने ताना कसा।

विनि का चेहरा शर्म से लाल हो गया, पर उसने हार न मानी। ''मेहरबानी से, बिना हिले-डुले बैठिए,'' उसने कहा।

वह दिन-ब-दिन लोगों की मूर्तियाँ बनाती और दिन-ब-दिन लोगों से चिरौरी भी करती।



कुछ दिनों में कांग्रेस के कई सदस्य उसकी ओर से राष्ट्रपति से बात करने को राज़ी हो गए। पर लिंकन को मनाना आसान नहीं था।

"वह बड़ी ही जानदार और प्यारी लड़की है," कांग्रेस सदस्यों ने राष्ट्रपति से कहा।

"विनि रीम बेहद प्रतिभाशाली और मेहनती है," उन्होंने चिरौरी की।

पर लिंकन ने हर बार इन्कार कर दिया। "कोई एक साधारण से दिखने वाले इन्सान की मूर्ति क्यों बनाना चाहता है?" उन्होंने जानना चाहा।

कांग्रेस सदस्यों ने आख़िरी कोशिश करते हुए कहा, "वह एक ग़रीब लड़की है - उसने खुद को यह हुनर सिखाया है - वह पश्चिम में एक लट्ठों की केबिन में पली-बढ़ी थी।"

"ग़रीब? खुद से सीखी? लट्ठों के केबिन में पली-बढ़ी? मैं ऐसे लोगों से नावाक़िफ़ नहीं हूँ," लिंकन ने कहा। उन्होंने विनि के लिए बैठने की आख़िरकार हामी भर ही ली।





विनि की खुशी मन में समा ही नहीं रही थी। वह महज सोलह साल की थी और अब वह राष्ट्रपति के साथ नियमित मुलाकातें कर रही थी। सप्ताह में पाँच दिन, हर दिन आधे घंटे के लिए, जब तक बुत पूरा नहीं हो जाता।

सर्दियाँ बसन्त में बदलीं और वॉशिंग्टन के इर्द-गिर्द सेब के फूल फूलने-महकने लगे। विनि हर दिन अपने मॉडल पर काम करने व्हाइट हाउस जाती। वह लिंकन को 'मिस्टर प्रेसिडेंट' कह संबोधित करती। पर उसके दिमाग़ में वे 'अब्राहम' थे उसके दोस्त! वे आपस में कभी हंसी-खुशी की बातें करते, अपने बचपन के एक समान अनुभवों को साझा करते, संगीत, कला और क़िताबों के अपने प्रेम की चर्चा करते।

पर किसी-किसी दिन वे कुछ न कहते। विनि ने राष्ट्रपति को जंग के दौरान सैंकड़ों सैनिकों की मौत का सोग मनाते देखा। वह हर दिन अब्राहम के बहादुर, उदास चेहरे को मिट्टी में ढालने की मशक्कत करती रही।

काम शुरू करने के पाँच महीने बाद, मध्य अप्रेल में वह राष्ट्रपति की सूरत को जस का तस ढ़ाल सकी। वह बेहद खुश थी!

उस वक़्त राजधानी में जश्न मनाने को और भी कुछ था। जंग ख़त्म हो चुकी थी - संघ को बचा लिया गया था! सैनिक अपने परिवारों के पास घर लौट चुके थे। सड़कों पर बैण्ड अपने साज़ बजाते कूच कर रहे थे। ज़िन्दगी फिर से सुखद होने वाली थी।







पर विनि और देश की खुशी अधिक टिकने वाली न थी। 14 अप्रेल 1865 को फोर्ड थियेटर में एक नाटक के दौरान जॉन विल्कस् बूथ नामक एक व्यक्ति ने राष्ट्रपति लिंकन की गोली दाग कर हत्या कर दी।

विनि को गहरा सदमा लगा। रोती विनि उस भीड़ में शामिल थी जो रेलरोड स्टेशन पर देश के राष्ट्रपति को, अपने प्यारे दोस्त अब्राहम को, अलविदा कहने खड़ी थी।



कुछ ही दिनों में अख़बारों में सूचना छपी कि कांग्रेस एक बुतसाज़ को तलाश रही है जो राष्ट्रपति लिंकन की स्मारक मूर्ति बना सके। विनि ने ख़त लिख कर यह ज़िम्मेदारी मांगी।

कांग्रेस के सदस्यों ने कहा, ‘‘यह एक लड़की को सुपर्द करने वाला काम नहीं है। यह ज़िम्मेदारी तो किसी महान अमरीकी मूर्तिकार को ही सौंपी जा सकती है।’’

विनि ने आग्रह करते हुए कहा, ‘‘मैं तो पैदा ही इस मूर्ति को बनाने के लिए हुई हूँ।’’ कुछ सदस्य जिनके बुत विनि ने बनाए थे, उन्होंने भी विनि की पैरवी की।

‘‘कहाँ सीखा है तुमने?’’ पूर्व के एक सीनेटर ने पूछा।

विनि ने थूक निगलते कहा, ‘‘अधिकतर तो अपने ही आप सीखा है।’’

दूसरे ने फटकार लगाई, ‘‘मिस रीम जिस तरह आप पीछे पड़ी हैं, वह औरतों को कतई शोभा नहीं देता!’’

विनि संसद कक्ष से सिर झुकाए निकली, उसकी आँखें नम थीं। उसे लगा कि लिंकन की प्रतिमा बनाने का मौका वह खो चुकी है।

पर विनि की विलक्षण प्रतिभा की अनदेखी नहीं की जा सकती थी। कई मशहूर शिल्पियों ने अपने प्रस्तावित मॉडलों में लिंकन को एक योद्धा राजा या एक संत के रूप में दर्शाया। पर विनि के मॉडल में राष्ट्रपति उस सदय और सौम्य इन्सान की तरह दर्शाए गए थे, जिन्हें वह क़रीब से जानती थी। मॉडल के चयन पर जब मत डाले गए तो विनि के मॉडल को नौ ‘नहीं’ और तेइस ‘हाँ’ के मत मिले। विनि जीत गई। वह न केवल सबसे कम उम्र की कलाकार थी बल्कि पहली स्त्री थी जिसे अमरीकी सरकार ने ऐसा काम सौंपा था।





विनि फ़ौरन काम में जुट गई। उसने कैपिटल (संसद) भवन में ही अपना स्टूडियो बनाया। उसे कला का साज़ो-सामान, सुन्दर फूल और अपने पालतू कपोतों की मधुर गुंजार से भर दिया।

तब विनि ने एक और काम किया, जो किसी कलाकार ने पहले कभी किया न था। उसने अपना स्टूडियो जनता के लिए खोल दिया। हर दिन आम जनता, कांग्रेस के सदस्य, सैनिक - जिनमें से कई 'पिता अब्राहम' के लिए लड़े थे, स्टूडियो में आते। यह देखते कि एक छोटे-से कद वाली युवा बुतसाज़ मचान पर चढ़, एक विशाल प्रतिमा को गढ़ रही है। प्रतिमा सात फीट लम्बी थी, लिंकन से भी बड़ी जो छह फीट और चार इंच लम्बे थे।



हालांकि विनि का स्टूडियो हमेशा खुला था, कुछ लोगों के दिमाग़ उसके लिए बिलकुल बन्द थे।

उसके आलोचक उसे हताश करना चाहते थे, "यह मूर्ति कभी बन ही नहीं सकती," वे कहते। "अरे यह ज़रा-सी लड़की ही तो है, बेशक नाकाम रहेगी।" मतलब वे दिन-ब-दिन उसकी कलात्मक काबलियत का, उसके कम उम्र होने का, उसके महज एक 'औरत' होने का मखौल उड़ाते।

जनता को फिक्र थी कि जो डॉलर उनके कर चुकाने से इकट्ठा होते हैं वे इस किशोरी पर बरबाद न हो जाएं। विनि ने और ज़्यादा मेहनत की, वह सब अनसुना कर तब तक जुटी रही जब तक उसका मॉडल तैयार न हो गया।

पर मॉडल बनने के साथ विनि का काम खत्म नहीं हुआ था। उसका मॉडल चिकनी मिट्टी का था पर मूर्ति तो संगमरमर में बनाई जानी थी। विनि ने अपने आदम-कद मॉडल को, अपने कपोतों को, अपने गिटार को समेटा और न्यू यॉर्क के बन्दरगाह से 'डाना' नामक जहाज़ में सवार हो इटली के लिए निकली, ताकि वह अपने मॉडल को संगमरमर में तराश सके।





इतालवी कलाकार इस साहसी अमरीकी बुतसाज़ से मिलने को आतुर थे जिसने पुरुषों से टक्कर ली और जीती थी। विनि, करारा की बेहतरीन खदानों में गई ताकि सबसे उम्दा और झक्क सफ़ेद संगमरमर चुन सके। "देर रात, बरसात हो चुकने के बाद," इतालवी बुतसाज़ों ने विनि को सलाह दी, "दमकते पत्थरों के पास एक मोमबत्ती ले कर जाओ और जो भी पत्थर 'ल लूना' यानी चाँद सा चमके उसे चुन लो।"

इस क़ीमती संगमरमर को तराशने का काम विनि ने पूरी श्रद्धा और सावधानी से शुरू किया। बेहतरीन इतालवी कारीगरों की मदद से संगमरमर को तराशने में साल भर लग गया।

मूर्ति बनाने की ज़िम्मेदारी पाने के पाँच साल बाद विनि के हाथों बनी अब्राहम लिंकन की प्रतिमा कैपिटल के गुम्बद में रेशमी अमरीकी झण्डे में लिपटी खड़ी थी। उसका अनावरण जो होना था। सेना का बैण्ड संगीत बजा रहा था और सैंकड़ों लोग मंच के गिर्द खड़े थे, यह देखने कि वह युवा मूर्तिकार कामयाब रही या नाकामयाब।

विनि भी उस भीड़ में थी। पर उसका कद बमुश्किल पाँच फीट का था उसे मूर्ति दिख नहीं रही थी। पर इससे कुछ फर्क नहीं पड़ा। उसने अपनी आँखें कस कर बन्द कर लीं, उसे अपने मानस पटल में मूर्ति के चेहरे के हावभाव, उसके चोंगे का हरेक बल, उसके हाथ का हरेक घुमाव साफ़ दिखाई दे रहा था।

गुम्बद में अब इतनी गहरी चुप्पी छा चुकी थी कि विनि को लगा कि उसके दिल की धड़कनें भीड़ को सुनाई दे रही होंगी, जो उस पल दहशत के मारे ज़ोर से धुकपुका रहा था। क्या उसकी कलाकारी स्वीकारी जाएगी? या फिर उस पर लानत और शर्म थोपी जाएगी?

राष्ट्रपति ग्रान्ट ने इशारा किया और धीरे-धीरे दमकते संगमरमर से सितारे और धारियों वाला झण्डा सरका।



कुछ लोगों ने बरबस उसाँस खींची।

एक बूढ़ा सैनिक गुपचुप रोने लगा।

एक औरत ने, जो पहले गुलाम थी, तालियाँ बजाईं।

जल्द ही ज़ोरदार वाहवाही और तालियों से सभागार गूँज उठा।

विनि की बनाई अमरीका के सोलहवें राष्ट्रपति लिंकन की प्रतिमा सामने खड़ी थी। उनका सिर विनीत भाव से झुका था, उनका एक हाथ आज़ादी का घोषणा-पत्र थामे था।

भीड़ मुग्ध थी। लोगों ने चाहा कि इस मौके पर विनि भी कुछ कहे। खुशी के आँसुओं के साथ विनि मुस्कुराई, उसने हाथ हिला सबका अभिवादन किया, आभार जताया, पर कुछ कह न सकी। पर उसका काम बोल रहा था। विनि रीम ने अपने दोस्त अब्राहम लिंकन को संगमरमर में ठीक उस तरह कैद कर लिया था जैसे अब्राहम ने अपने देश के दिल को।



लेखिका की कलम से

इस कहानी का अधिकतर संवाद काल्पनिक है। पर इसकी घटनाएं वास्तविक हैं, जिनकी जानकारी हमें विनि रीम की जीवनियों से, और उनके खुद के लेखन से मिलती है। विनि रीम ने लिंकन की जो प्रतिमा बनाई थी, वह आज भी कैपिटल रोटुण्डा (गोलाकार कक्ष) में खड़ी है। लिंकन की मूर्ति बनाने के बाद विनि ने कई दूसरे मशहूर अमरीकियों के बुत भी बनाए जिनमें राष्ट्रपति जेम्स गारफील्ड व यूलिसिस एस. ग्रांट तथा जनरल रॉबर्ट ई. ली शामिल थे।

अमरीकी गृह युद्ध ने विक्टोरियन युग के उस नज़रिए को पछाड़ने में मदद की जो स्त्रियों की आज़ादी को हतोत्साहित करता था। युद्ध के साथ औरतों नर्सें बनीं, कुछ ने पुरुषों की वर्दी पहनी और सैनिकों की तरह लड़ीं, तो कुछ ने सूज़न बी. एन्थनी और एलिज़ाबैथ केडी स्टोन की तरह औरतों को मताधिकार देने की लड़ाई लड़ी।

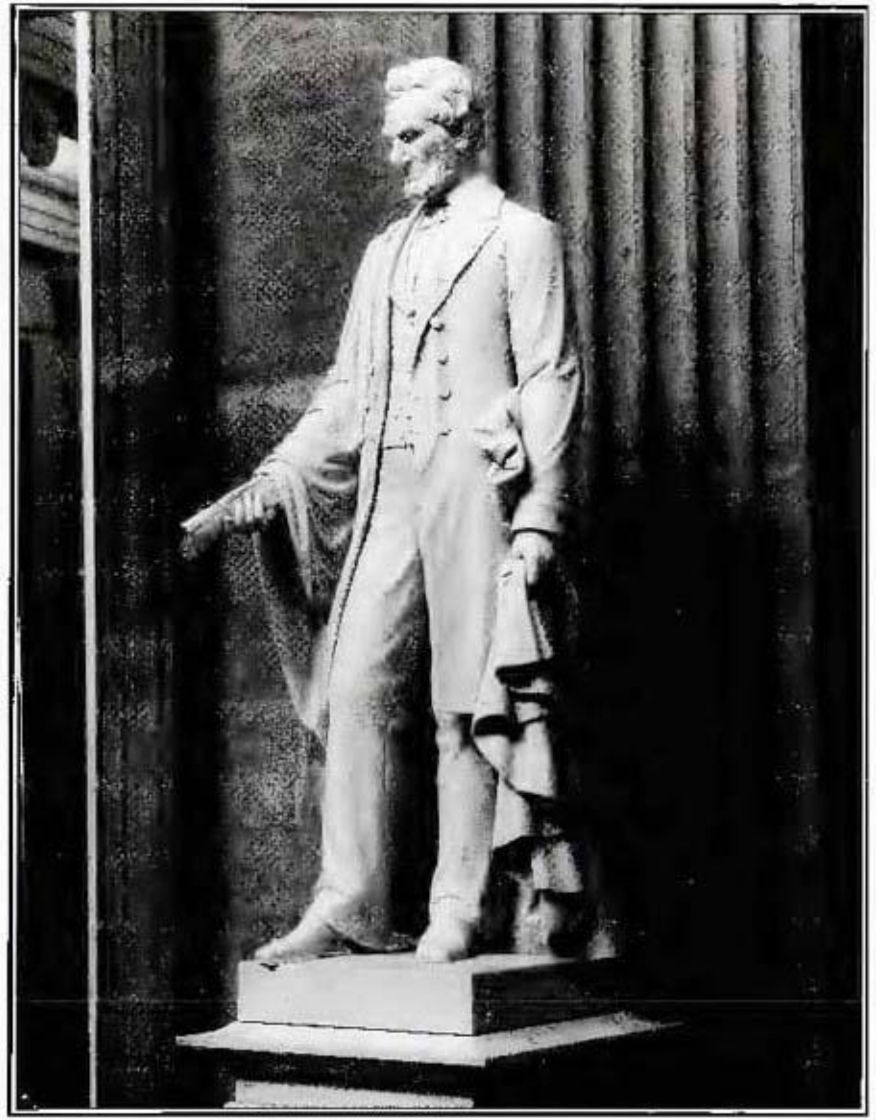
अब क्योंकि पुरुष लाम पर लड़ रहे थे, श्रम बल में औरतों ने उनकी जगह ली। यही कारण था कि विनि रीम को डाक विभाग में क्लर्की करने का मौका मिल सका। विनि को यह जान बेशक बेहद खुशी होती कि उसके पहले नियोक्ता, यानी डाक विभाग ने 1980 में उसकी कलात्मक उपलब्धियों के सम्मान में उसका एक डाक टिकट जारी किया था।

लिंकन की प्रतिमा की कामयाबी के साथ विनि को विवाह के कई प्रस्ताव मिले। पर विनि ने वे ठुकरा दिए और खुद को कला के लिए समर्पित किया। 1878 में 30 वर्ष की उम्र में विनि ने लैफ्टिनैन्ट रिचर्ड लैवरिज हॉक्सी से विवाह किया। 1883 में उनके बेटे रिचर्ड रीम हॉक्सी का जन्म हुआ।

विनि के पति ने विनि से आग्रह किया कि वे घर-परिवार के ख़ातिर अपना काम छोड़ दें। विनि ने छोड़ा भी - कुछ समय के लिए। पर वे हमेशा के लिए नहीं छोड़ सकी। “मेरा काम मेरे लिए कभी बोझ नहीं रहा, बल्की उसने हमेशा मेरी आत्मा को बेइन्तिहा सकून दिया। अपने स्टूडियो में काम करते समय मुझे राजा-महाराजाओं की शानो-शौकत से रश्क नहीं होता; मेरा दिमाग ही मेरा राज-पाट था और मेरा काम हीरे-जवाहरातों से अधिक क़ीमती। अगर प्रोत्साहन के लिए कहे मेरे शब्द किसी कलाकार में नई उम्मीद जगा सकें तो मुझे बेहद खुशी होगी। हम बखूबी जानते हैं कि हम वही चित्रित कर सकते हैं जो हम में है...हम वही देते हैं जो हमारे पास है। हमारा काम ही हमारे लिए बोलता है।” 1906 में विनि जब काम पर लौटीं उन्हें आयोवा के राज्यपाल सैम्युअल किर्कवुड की प्रतिमा बनाने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई।

विनि ने अपनी आख़िरी मूर्ति तब बनाई जब उनके गुर्दों ने काम करना बन्द कर दिया था और वे अपनी मौत की ओर बढ़ रही थीं। वे इतनी कमज़ोर हो चुकी थीं कि उनके पति ने उनके लिए एक ऐसी कुर्सी बनाई जो रस्सियों से ऊपर उठाई जा सके। ताकि वे बैठे-बैठे ही मूर्ति के चारों ओर पहुँच सकें। यह प्रतिमा सिक्वोया की पहली खड़ी मूर्ति थी, जो चिरोकी (अमरीका के मूल निवासियों की भाषा) वर्णमाला के रचयिता थे। यह प्रतिमा भी कैपिटल में प्रदर्शित है। विनि को यह सटीक लगा कि उनकी पहली और अंतिम रचनाएं अमरीका के मूल निवासियों को दर्शाती थीं।

विनि की मृत्यु 1914 में 67 वर्ष की उम्र में हुई। उन्हें आर्लिंगटन के राष्ट्रीय कब्रगाह में दफनाया गया। उनकी कब्र पर उनके द्वारा डिज़ाइन की गई ‘सैफो’ की मूरत बनी है। सैफो ग्रीक कवियत्री थी जिसने कला रचना के लिए अपने युग की रूढ़ियों का विरोध करने का साहस किया था।



विनि रीम द्वारा बनाई अब्राहम लिंकन की प्रतिमा।

